Volume-II, No. 1, Feb -2015, pp. 1-7

उत्तरांचल में कृषि भूमि की प्रगति की समीक्षा

डॉ0 बबली चन्द्रा विभागाध्यक्षा अर्थशास्त्र विभाग,
वाई.एम.एस. (पी.जी.) कॉलेज मण्डी धनौरा (अमरोहा) उ.प्र. भारत।

उतराखण्ड का निर्माण 9 नवम्बर सन् 2000 को भारत के सत्ताईसवें राज्य के रूप में उतराचल नाम से हुआ। उतराखण्ड दो मण्डलों में विभक्त हैं जिसमें 13 जिले हैं। इसका क्षेत्रफल 53483 वर्ग कि0मी0 हैं। और यहॉ 1,01,16,752(2011 की जनगणना के अनुसार) जनसंख्या निवास करती हैं। उतराखण्ड का मौसम दो भागों में विभक्त हैं। पर्वतीय और कम पूर्वतीय। राज्य में वार्षिक औसत वर्षा वर्ष 2007 के ऑकड़ों के अनुसार 1606 मिमी. हुई थी। इसके अलावा राज्य में बहती नदियों के बाहुल्य के कारण पनविद्युत परियोजनाओं का भी अच्छा योगदान हैं। उतराखण्ड में कृषि भूमि का विकास तीव्र गति से हो रहा हैं। उतराखण्ड का अधिकांश भाग पर्वतीय हैं। यहॉ भूमि में नमी के कारण वनों की अधिकता हैं। जिसके कारण जलवायु में विभिन्नता पाई जाती है। यहॉ दिन के समय गर्मी पड़ती है। किन्तु रात को तापमान हिमांक से नीचे पहुॅच जाता हैं। वनस्पति की दृष्टि से उतरांचल समृद्ध हैं। 65 प्रतिशत भू– भाग वनों से आ़च्छादित हैं। उतरांचल में कृशि योग्य भूमि उपजाऊ है। परन्तु यहॉ पर्वतीय क्षेत्रों की अधिकता है। जिस कारण कृषि योग्य भूमि को किसान अत्यन्त मूल्यवान परिसम्पत मानने लगे हैं।

उतराखण्ड (पूर्व नाम उतरांचल) उत्तर भारत में स्थित राज्य हैं। जिसका निर्माण 9 नवम्बर सन् 2000 को भारत के सत्ताईसवे राज्य के रूप में उत्तराचल नाम से हुआ। पारस्परिक हिन्दू ग्रन्थों और प्राचीन साहित्य में इस का उल्लेख उत्तराखण्ड में किया। इससे पहले यह उत्तर प्रदेश का एक भाग था। उत्तराखण्ड 2 मण्डलों गढ़वाल और कुमाऊॅ में विभक्त है। उत्तराखण्ड में 13 जिले जिनमें 7 गढ़वाल में देहरादून, उत्तरकाशी, पौड़ी, टेहरी, चमोली, रूद्रप्रयाग, हरिद्वार और कुमाऊॅ में 6 अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़, चम्पावत, बागेश्वर और उद्यम सिंह नगर हैं।

उत्तराखण्ड का क्षेत्रफल 53483 वर्ग कि0मी0 है। और यहॉ 1,01,16,752 (2011 की जनगणना के अनुसार) जनसंख्या निवास करती हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि और सम्बन्धित उद्योगों पर आधारित है। राज्य की लगभग 55 लाख हेक्टेअर भूमि में वन क्षेत्र लगभग 63 प्रतिशत है। राज्य की कृषि योग्य भूमि लगभग 12.5 प्रतिशत है। राज्य की लगभग 11.5 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि उनुपयुक्त है। इसके अतिरिक्त स्थायी चारागाह भूमि 4.25 प्रतिशत तथा परती भूमि 2. 25 प्रतिशत है। इसके साथ ही कुल सिंचित कृषि भूमि लगभग 3.4 लाख हेक्टेअर है।

उत्तराखण्ड का मौसम दो भागो में विभाजित किया जा सकता है। पर्वतीय और कम पर्वतीय या समतलीय। उत्तर और उत्तर–पूर्व में मौसम हिमालयी उच्च भूमियों का प्रतीकात्मक है। जहॉ पर मानसून का वर्षा पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण अधिक वर्षा होती है और भूमि में नमी पायी जाती है। राज्य में वार्षिक औसत वर्षा वर्ष 2007 के आकड़ों के अनुसार 1606 मिमी0 हुई थी। अधिकतम तापमान पंतनगर में 40.2 डिग्री से0 2007 अंकित एंव न्यूनतम तापमान 5.4 डिग्री से मुक्तेश्वर में अंक्ति है। इसके अलावा राज्य में बहती नदियों के बाहुल्य के कारण पनविद्युत परियोजनाओं का भी अच्छा योगदान हैं। राज्य में पनविद्युत उत्पादन की भरपूर क्षमता है। यमुना, भागीरथी, लागंना, अलकनन्दा, मन्दाकिनी, सरयू, गौरी, कोसी और काली नदियों पर अनेक पनिबिजली संयत्र लगे हुए है। जिनसे बिजली का उत्पादन हो रहा है। राज्य के 15,667 गॉवो मेंसे 14,447 (लगभग 92.22/) गॉवों में बिजली है इसके अलावा उद्योगों का एक बड़ा भाग वन सम्पदा पर आधारित है। राज्य में कुल 5,4047 जनसंख्या हस्तशिल्प उद्योगों में क्रियाशील है।

उत्तराखण्ड में कृषि भूमि का विकास तीव्र गति से हो रहा है। उत्तराखण्ड कृषि भूमि के विकास की भावी सम्भावनाएं सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यभाग पर निर्भर करती हैं विशेषकर सिंचाई, कुल्याओं और बाढ़ नियंत्रण में निवेष, भ– समकेन भूमि के कटाव और लवणता को रोकना, विस्तार पूर्वक अनुसंधान और विस्तार सेवा का जाल फैलाना, ग्रमीण बिजली घर और संस्थानात्मक ऋण का प्रावधान।

उत्तराखण्ड में तराई व भावर क्षेत्र के अन्तर्गत हरिद्वार उद्यम सिहं नगर के मैदानी क्षेत्र सम्मलित है। जिसके

कारण उत्तराखण्ड का अधिकांश भाग पर्वतीय है। भूमि में नमी होने के कारण वनों की अधिकता है। राज्य का लगभग 87 प्रतिशत भू–भाग पर्वतीय है। इस क्षेत्र में धरातलीय संरचना के अनुरूप जलवायु में विभिन्नता पाई जाती है यहा दिन के समय गर्मी पड़ती है किन्तु रात को तापमान हिमांक से नीचे पहुॅच जाता है यहॉ पर अधिक बर्षा के कारण अधिकांश क्षेत्र में उपयोगी वन पाये जाते हैं जिनमें मुख्यतः पर्णपाती, कन्जु, साल, सेमल, तनु, हल्दू, खैर चीड़, साइप्रस, देवदार, सिसू बर्च, आदि के वृक्ष प्रमुख हैं नदियों के किनारे बास और वेत अधिक मिलते है।

जलवायु भिन्नता के कारण वनस्पति कृषि एवं मानवीय रीति रिवाजों पर विशेष प्रभाव पड़ता है। ये जलवायु विभिन्न मौसमों में चक्र के रूप मे चलती है वनस्पति की दृष्टि से उत्तरांचल समृद्ध है। 65 प्रतिशत भू–भाग वनों से आच्छादित है 32 प्रतिशत वन कुमाऊॅ मण्डल में है। वनों का सर्वाधिक भाग 30 प्रतिशत उत्तरकाशी जनपद में है। पिथौरागढ़ व चमोली का वन भूमि का कम होना हिमाच्छादित प्रमुख कारण है। कुमाऊॅ में 36 प्रतिशत भाग वन नैनीताल जिले में है। बुग्याल वनस्पति हिमालयी क्षेत्रों में प्रारम्भ होती है ये हरे–भरे मैदान के रूप में दिखाई देती है।

कृशि भूमि में प्शु–पालन व कृषि भूमि से सम्बन्धित उद्योग–धन्धो मे भूजल का ही सर्वाधिक उपयोग हो रहा हैं उक्त उपयोगार्थ नदी जल से पर्याप्त पूर्ति न होने के फलस्वरूप भूजल का पर्याप्त दोहन किया जाता है। फलतः भूमि का जल 1 से 1.5 प्रतिवर्श के हिसाब से नीचे गिरता जा रहा है परिणामस्वरूप भूजल के ऊपरी जल स्रोत सूख रहे हैं जो कृषि भूमि के लिए नुकसान का कारण हैं जिसके कारण कृषि योग्य भूमि का ह्रास हो रहा है। भारतीय संस्कृति में आदिकाल से ही कृषि भूमि का पर्याप्त स्थान व महत्व रहा है। ह्मारे प्राचीनतम साहित्य व वेदों में भी कृषि संस्कृति के उन्नयन से सम्बन्धित विविध अनुपम प्रसंग हमारे पुराणों में भी यत्र–तत्र सर्वत्र प्राप्त होते हैं।

वर्तमान समय में भू–जल के ऊपरी जल स्रोत सूख रहे है जिसका प्रभाव कृषि भूमि पर पड़ रहा है जो कृषि भूमि के लिए चिन्ता का कारण है। अधिक पानी चाहने वाली नकदी फसलों की प्रजातियों का प्रादुर्भाव फसलों की नवीनतम बौनी एवं सकंर प्रजातियों में सिंचाई जल की अधिक आवश्यकता होती है जिससे कृषि भूमि उपजाऊ बन सके।

उतरांचल में कृषि योग्य भूमि उपजाऊ है परन्तु यहॉ पर्वतीय क्षेत्रों की अधिकता है जिस कारण कृषि योग्य भूमि को किसान अत्यन्त मूल्यवान परिसम्यता मानने लगे हैं और इसके नतीजे के तौर पर गैर कानूनी या गुप्त काश्तकारी में वृद्धि हुई है दूसरे शब्दों में काश्तकारों के शोषण में कमी नहीं हुई है और परिणामस्वरूप कृषि की प्रगति के लाभ समृद्ध किसानो की जेबों में प्रवेश कर रहे हैं। यह बढ़ते हुए कृषि उत्पादन और बढ़ती हुई असमानताओं एवं अन्यायों के बीच विरोधभास है।

सन्दर्भ सूची

1. दत्त एवं सुन्दरम, भारतीय अर्थव्यवस्था पृष्ठ सं0–528
2. मिश्र, डॉ कैलाश– ''उत्तरांचल एक परिचय''
3. गौतम, डॉ अल्का– ''विश्व भूगोल'' पृष्ठ सं0–22